2. हिंदी निबंध की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी कहानी के स्वरूप एवं उसकी विशेषताओं का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

3. 'अनमोल रतन' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

4. 'उत्साह' निबंध का प्रतिपादय लिखिए।

अथवा

शिल्प की दृष्टि से 'आचरण की सभ्यता' निबंध का विश्लेषण कीजिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर 'पन्ना धाय' की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए।

अथवा

'भोलाराम का जीव' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :

(क) प्रेमचंदोत्तर कहानी

(ख) निबन्ध

(3000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 12623 **K**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **B.Com. Prog. (GE)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) जवांमर्द की आवाज मद्धिम हो गई, अंग ढीले पड़ गए, खून इतना ज्यादा बहा कि खुद-ब-खुद बंद हो गया। रह-रहकर एकाध बूंद टपक पड़ता था। आखिरकार सारा शरीर बेदम हो गया, दिल की हरकत बंद हो गई और आंखें मुंद गईं। दिलफिगार ने समझा अब काम तमाम हो गया कि मरनेवाले ने धीमे से कहा- 'भारत माता की ज़य' और उनके सीने से खून का आखिरी कतरा निकल पड़ा। एक सच्चे देशप्रेमी और देशभक्त ने देशभक्ति का हक अदा कर दिया।

SRI AUROBINDO COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

अथवा

बुड्ढे मुसलमान ने बच्चे को देने के लिए जो पैसा निकाला था, वह उसने वापस जेब में रख लिया। सिर से टोपी उतारकर वहां थोड़ा खुजलाया और टोपी अपनी बगल में दबा ली। उसका गला खुश्क हो रहा था और घुटने थोड़ा कांप रहे थे। उसने गली के बाहर की एक बंद दुकान के तख्ते का सहारा ले लिया और टोपी फिर से सिर पर लगा ली। गली के सामने जहां पहले ऊंचे-ऊंचे शहतीर रखे रहते थे, वहां अब एक तिमंजिला मकान खड़ा था। सामने बिजली के तार पर दो मोटी-मोटी चीलें बिल्कुल जड़-सी बैठी थीं। बिजली के खम्भे के पास थोड़ी धूप थी। वह कई पल धूप में उड़ते जरा को देखता रहा। फिर उसके मुंह से निकला : "या मालिक"।

(ख) कर्म में आनंद अनुभव करने वालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्म-वीर का सच्चा सुख है। उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता, जब तक कि फल प्राप्त न हो जाएय बल्कि उसी समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगता है, जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है।

अथवा

मौनरूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बलवती, इतनी अर्थवती और इतनी प्रभाववती होती है कि उसके सामने क्ष्या मातृभाषा, क्या साहित्य भाषा और क्या अन्य देश की भाषा, सबकी सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है। विचार करके देखो,मौन व्याख्यान किस तरह आपके हृदय की नाड़ी-नाड़ी में सुन्दरता को पिरो देता है। वह व्याख्यान ही क्या जिसने हृदय की धुन को- मन के लक्ष्य को ही न बदल दिया।

(ग) "क्या बताऊं? गरीबी की बीमारी थी। पांच साल हो गए पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थेय पर वहां से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले में विचार हो रहा है। इन पांच सालों में सब गहने बेचकर हम लोग खा गए। फिर बरतन बिके, अब कुछ नहीं बचा था। चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

अथवा

कीरत - कुँवर जू जुग-जुग जिएं धाय मां। जबसे कुंवर जी बूंदी से आए हैं, तब से सगर महल में उजियार फैल गया है। राणा विक्रमादित्य जब हरि भजन करेंगे तब धाय मां, अपना चौर-छतर कुंवर जू को ही सौंपेंगे, और जब कुंवर जू राणा होएंगे तो सगर जहान उनको बंदगी करने आएगा। सच जानो धाय मां। कुंवर जू के सरूप दर्शन दाखिल हैं। मैं तो उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूं, (ठहर कर) धाय मां, कुछ सोच रही हैं? (8×3=24)